Regarding clash between Police and tribal students in Pakur

डॉ. निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : माननीय सभापति महोदया, मैं लगातार पार्लियामेंट में संथाल परगना के आदिवासियों के बारे में बोलता रहा हूं । यह सदन को सोचने का सवाल है । जिस आदिवासी की पॉपुलेशन वर्ष 1951 में 48 परसेंट हुआ करती थी, वर्ष 2000 में वह 36 परसेंट थी और आज 26 परसेंट है । मैं उस मुद्दे पर जाना ही नहीं चाहता, जो बोलना है बोल दिया । वहां के आदिवासी लड़के परसों पांकुड़ में एक आंदोलन करना चाह रहे थे, जनाक्रोश रैली थी क्योंकि आदिवासी की सीट बांग्लादेशी लेकर जा रहे हैं । बांग्लादेशी बोलने में भी समस्या है । ? (व्यवधान) बांग्लादेशी बोलने में भी समस्या है । ? (व्यवधान) मैंने मुसलमान-हिन्दू तो नहीं बोला, यह हिन्दू-मुसलमान का सवाल ही नहीं है । यहां ओवैसी साहब से लेकर सारे मुस्लिम बैठे हुए हैं, उनको सोचने का सवाल है कि हिन्दुस्तान के मुस्लिम सुरक्षित रहेंगे कि नहीं या बांग्लादेशी लेकर जाएंगे ।

मैं केवल यह कहना चाह रहा हूं कि वे लड़के आंदोलन करना चाह रहे थे । उन लड़कों को उनके हॉस्टल के अंदर, पांकुड़ में 27 तारीख को पुलिस ने घुस कर बर्बरतापूर्ण तरीके से उन आदिवासी लड़कों को पीटा, दो लड़के मरणासन्न हैं, शायद उनकी मौत हो जाएगी, 11 आदमी ऐसे हैं जिनको बड़े अस्पताल में रेफर किया गया है । शेड्यूल ट्राइब्स कमीशन ने इसका संज्ञान लिया है ।

मेरा आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है कि राज्य सरकार बांग्लादेशियों को बसाने के लिए आदिवासियों का सत्यानाश कर रही है । इसके लिए वहां राष्ट्रपति शासन लगाया जाए ।